''माध्यमिक विद्यार्थियों की भावात्मक परिपक्वता एवं सामाजिक परिपक्वता का एक अध्ययन''

"A study of Emotional Maturity and Social Maturity of Secondary Students"

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

को पीएच. डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध–प्रबन्ध का प्रारूप

शिक्षा संकाय

शोधकर्ता:

पर्वत सिंह राठौड़

शोध निर्देशकः

डॉ. नगेन्द्र सिंह

प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

2016

Scanned with CamScanner

CERTIFICATE BY SUPERVISOR

Certified that:-

1. I am willing to guide the research work of **Mr. Parvat Singh Rathore** on the above subject if he registered for Ph.D.
2. To the best of my knowledge the subject selected has not been studied so far in any university.
3. The subject is of sufficient scope to keep the candidate engaged for two years.
4. The subject will lead to a valuable contribution. I have seen and approved the outline and bibliography, etc. submitted by the candidate.
5. Necessary facilities are available in the department for the above research work (Certificate from Principal/Head University Department with regards to facilities available is enclosed).
6. I have .... research candidate registered under my supervision and the serial no. of this candidate whose application being forwarded for registration is ....
7. The candidate is not a close relation (the term close relation is defined in examination ordinance of the university).

डॉ० नगेन्द्र सिंह
Dr. Nagendra Singh
विभागाध्यक्ष-शिक्षा
Head Deptt. of Education
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
Regional Institute of Education
अजमेर (राज०)/ Ajmer (Raj.)

Signature of the Suipervisor with date

Certified that the available facilities will be extended to Mr. **Parvat Singh Rathore** for research work if he registered for Ph.D.

Signature of Principal/ Director of the Institute with date

प्राचार्य
Principal
क्षे. शि. सं. अजमेर
R. I. E. AJMER

Scanned with CamScanner

APPENDIX-IV

Format for outline of Proposed Research Work

(To be supplied in four copies)

1. Name of scholar :
   (In English) Parvat Singh Rathore
   (In Hindi) : पर्वत सिंह राठौड़

2. Title of Research Work :
   (In English) : **"A study of Emotional Maturity and Social Maturity of Secondary Students"**
   (In Hindi) : ''माध्यमिक विद्यार्थियों की भावात्मक परिपक्वता एवं सामाजिक परिपक्वता का एक अध्ययन''

3. Location : **Department of Education RIE, Ajmer**

4. Importance of proposed investigation, objectives : **Annexure-1**

5. Review of work already done on the Subject of proposed research study. : **Annexure-2**

6. Research gaps identified in the proposed field of investigation. : **Annexure-3**

7. Major hypothesis, if any : **Annexure-4**

8. Material and methods/research methodology.: **Annexure- 5**

9. Bibliography : **Annexure - 6**

Name & Signature of Supervisor with date	**Signature of Candidate with date**
डॉ. नागेन्द्र सिंह Dr. Nagendra Singh विभागाध्यक्ष-शिक्षा Head Deptt. of Education क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान Regional Institute of Education अजमेर (राज.)/ Ajmer (Raj.)	30/5/16

Scanned with CamScanner

Annexure-1

Importance of Proposed Investigation and Objectives
शोध समस्या का महत्व एवं उद्देश्य

आधुनिक युग में हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अनुसंधान का विशेष महत्व है। समाज और राष्ट्र की प्रगति को शोध के परिणाम द्वारा पहचाना जाता है, क्योंकि समाज और राष्ट्र की मूल समस्याओं का समाधान शोधकार्य द्वारा किया जाता है। इसी क्रम में शिक्षा के क्षेत्र में आने वाली समस्याओं के समाधान हेतु शोध की अपनी विशेष भूमिका है। विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों के विकास हेतु विभिन्न प्रयास किए जाते हैं। माध्यमिक स्तर का शिक्षण कार्यक्रम ही विद्यार्थी के सम्पूर्ण जीवन के विभिन्न चरणों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण माना जाता है। इन विद्यालयों में आने वाले छात्र–छात्रायें बाल्यावस्था की सीमा पार करते हुऐ किशोरावस्था में प्रवेश करते हैं। इन विद्यालयों में वे अपने अधिकारों एंव कर्तव्यों का पाठ पढ़ते हैं तथा नागरिकता की शिक्षा प्राप्त करके अपने भावी जीवन की तैयारी करते हैं। यह काल बालक–बालिकाओं के बनने–बिगडने का काल होता है, क्योंकि इस समय विद्यार्थियों में स्वाभाविक रूप से विशेष ऊर्जा एंव स्फूर्ति होती है। नेतृत्व एवं नागरिकता का प्रशिक्षण इन विद्यालयों का दायित्व है। इस स्तर पर बालक–बालिकाओं को बड़े ही संतुलित मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है।

शिक्षा जीवन का सम्पूर्ण शास्त्र है। ज्ञान का अंतिम लक्ष्य चरित्र निर्माण करना है। मनुष्य के जीवन में शिक्षा का महत्व उतना ही जितना की रोटी, कपड़ा और मकान का । शिक्षा–प्रक्रिया के तीन महत्वपूर्ण अंग है– शिक्षक, शिक्षार्थी और पाठ्यक्रम। प्राचीन समय में शिक्षा का केन्द्र बिन्दु शिक्षक होता था, किन्तु वर्तमान समय में शिक्षक की स्थिति गोण हो गई है। वर्तमान परिस्थितियों के अनुरूप आज शिक्षा का भी स्वरूप बदला है जिसके कारण आज शिक्षा का केन्द्र बालक है आज सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था बालक केन्द्रित हो गई है। अतः वर्तमान समय में बालक को केन्द्र मानकर सम्पूर्ण पाठ्यक्रम की रचना की जाती है। किन्तु इसके साथ ही हमें बालक के व्यक्तित्व तथा उसकी क्षमताओं का भी आंकलन कर लेना आवश्यक है। बिना आंकलन के शिक्षा प्रदान करना घातक हो सकती है जिस प्रकार एक डॉक्टर भी मरीज को दवा देने से पूर्व उसकी सम्पूर्ण जाँच करके ही दवा देता है। यदि बालक के व्यक्तित्व तथा उसकी क्षमताओं को जाने बिना ही शिक्षा दी गई तो इसके दुष्परिणाम बरोजगारी, हिंसा, अनुशानहीनता, भ्रष्टाचार, मानसिक तनाव, युवा–आक्रोश के रूप में समाज के सामने प्रकट होगें।

Scanned with CamScanner

वर्तमान समय में देश एवं सम्पूर्ण जगत के शिक्षाविद् इस क्षेत्र में रूचि ले रहा है कि शिक्षा संबंधी नवीन नीति एवं उपयोगी पाठ्यक्रम का निर्माण किया जा सके। इस नवीन नीति में बालक के व्यक्तित्व एवं क्षमता का विशेष ध्यान देना आवश्यक है। क्योंकि आज के बालक मे ही कल के सुन्दर, स्वस्थ एवं प्रगतिशील समाज एवं देश का भविष्य निर्भर है इसलिए बालक का विद्यार्थी जीवन में संयमी, सदाचारी, सुयोग्य, चरित्रवान, भावात्मक एवं सामाजिक रूप से परिपक्व तथा आत्मविश्वास से युक्त होना अत्यन्त आवश्यक है। बालक परिवार, विद्यालय एवं समाज में रहकर ही भावात्मक परिपक्वता एवं सामाजिक परिपक्वता को प्राप्त करता है। बालक जितना भावात्मक एवं सामाजिक रूप से परिपक्व होगा वह उतना ही परिवार, समाज एवं देश के प्रति अपना सहयोग दे पायेगा।

बालक की प्रथम पाठशाला परिवार होता है। बालक परिवार एवं समाज में रहकर ही समाज के लोगों से जुड़ता है जिससे बालक सांस्कृतिक विशेषताओं को ग्रहण कर अपने व्यक्तित्व का विकास करता है। इससे ही बालक में भावात्मक एवं सामाजिक परिपक्वता का विकास होता है। बालक के भावात्मक परिपक्वता एवं सामाजिक परिपक्वता का विकास भी उसकी अभिवृद्वि से सम्बन्धित है। बालक का ज्यों–ज्यों विकास होता है, त्यों–त्यों उसके शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, भावात्मक एवं सामाजिक व्यवहारों का भी विकास होता है। इससे बालक सर्वप्रथम परिवार एवं फिर समाज में अपना स्थान बना लेता है। इसलिए बालक के भावी जीवन के निर्माणार्थ परिवार एवं समाज का मत्वपूर्ण योगदान होता है। एक सामाजिक प्राणी के लिए समाज के कृत्यों, परम्पराओं, व्यवहारों और जीवन–मूल्यों को जानना आवश्यक है। इन सभी का विकास एक बालक में तभी होगा जब उसे शिक्षा के उचित अवसर के साथ उचित वातावरण प्राप्त होगा तब बालक की भावात्मक परिपक्वता एवं सामाजिक परिपक्वता का विकास स्वतः ही होगा।

शिक्षा जीवन का मूलाधार है किन्तु वर्तमान समय में यह व्यक्ति की प्राथमिक आवश्यकताओं का हिस्सा बन गई। शिक्षा ही बालक के सर्वांगीण विकास में सहायक है और बालक के व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों में मात्रात्मक व गुणात्मक परिवर्तन शिक्षा से ही सम्भव है। **फ्रेण्डसन** का मानना है कि शिक्षा वह है जो व्यक्ति एवं समाज दोनों का कल्याण करती है अर्थात् जब व्यक्ति स्वस्थ एवं समृद्ध होता है तभी वह परिवार, समाज, राष्ट्र एवं विश्व के विकास एवं उत्थान में अपना सहयोग प्रदान कर सकता है। ज्यों–ज्यों बालक प्रौढ़ अवस्था को प्राप्त करता है उसमें परिपक्वता आने लगती है। शिक्षा के माध्यम से उसकी परिपक्वता को सही दिशा प्रदान की जा सकती है

मनोवैज्ञानिकों के मतानुसार बालक में भावात्मक परिपक्वता एवं सामाजिक परिपक्वता के विकास में परिवार का वातावरण, विद्यालय का वातावरण,

Scanned with CamScanner

मित्र–मण्डली, पास–पड़ोस, संचार के साधन, व्यक्तित्व, धार्मिक संस्थान, खेल, मनोरंजन के साधन आदि का विशेष योगदान होता है।

प्रस्तावित शोध के उद्देश्य–

किसी भी शोध कार्य को शुरू करने से पूर्व उसके उद्देश्यों का निर्धारण शोध की स्पष्टता की दृष्टि से आवश्यक है बिना किसी उद्देश्य के कोई भी कार्य सिध् नहीं हो सकता है। उद्देश्यों से उस शोध कार्य का महत्व एवं उपयोगिता बढ़ जाती है। इसलिए शोधार्थी प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक विद्यार्थियों की भावात्मक परिपक्वता एवं सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन किया, जिसके अनुसार निम्नलिखित उद्देश्यों का निर्धारण किया है :–

1. भावात्मक परिपक्वता के आधार पर उनमें भावात्मक अस्थायित्व का अध्ययन करना।
2. भावात्मक परिपक्वता के आधार पर उनमें भावात्मक प्रतिगमन का अध्ययन करना।
3. भावात्मक परिपक्वता के आधार पर उनमें सामाजिक अपसमायोजन का अध्ययन करना।
4. भावात्मक परिपक्वता के आधार पर उनमें व्यक्तित्व विघटन का अध्ययन करना।
5. भावात्मक परिपक्वता के आधार पर उनमें स्वतंत्रता की कमी का अध्ययन करना।
6. सामाजिक परिपक्वता के आधार पर उनमें व्यक्तिगत पर्याप्तता का अध्ययन करना।
7. सामाजिक परिपक्वता के आधार पर उनमें अन्तर संबंध पर्याप्तता का अध्ययन करना।
8. सामाजिक परिपक्वता के आधार पर उनमें सामाजिक उपयुक्त्ता का अध्ययन करना।

Scanned with CamScanner

Annexure-2

Review of work already done on the Subject of proposed research study

संबंधित साहित्य का अध्ययन

शोध कार्य के पथ पर आगे बढ़ने के लिये पूर्व में हुये शोध अध्ययन की जानकारी होना अति आवश्यक है। शोध की दिशा का निर्धारण करने में, न्यादर्श के चयन में, उद्‌देश्य एवं परिकल्पना के निर्धारण में, उचित उपकरण के चयन में तथा उचित सांख्यिकी विधियों के चयन में सहायक होते है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि संबंधित साहित्य का अध्ययन शोधकार्य के लिए अति आवश्यक है। इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी ने भावात्मक परिपक्वता एवं सामाजिक परिपक्वता के प्रभाव से संबंधित शोध अध्ययनों का गहनता से अध्ययन कर शोध को दिशा देने का प्रयास किया है।

भावात्मक परिपक्वता एवं सामाजिक परिपक्वता से संबंधित शोध अध्ययन–

1. **अस्थाना, अंजू (1989)–** ने लखनऊ शहर के स्कूल जाने वाले बच्चों के मध्य सामाजिक प्रौढ़ता का एक अध्ययन किया।

उद्‌देश्य– सामाजिक प्रौढ़ता के साथ श्रेणियों के स्तर के साथ वृद्धि का संगठन, सामाजिक आर्थिक स्तर, शैक्षिक प्राप्ति, युवा निर्भरता और लिंग के साथ सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन करना था।

निष्कर्ष– लिंग ने विभिन्न श्रेणी स्तरों की सामाजिक प्रौढ़ता के साथ अपने संगठन का एक समरूप चित्र प्रस्तुत नहीं किया। लिंग सामाजिक प्रौढ़ता के साथ सम्बन्धित नहीं पाया गया।

2. **श्रीवास्तव, रेमी (1992)–** ने नवोदय विद्यालयों में पढ़ रहे माध्यमिक विद्यार्थियों के मनोसामाजिक विशेषताओं का अध्ययन किया।

उद्‌देश्य– नवोदय विद्यालयों में पढ़ रहे माध्यमिक विद्यार्थियों के मनोसामाजिक पद, बुद्धि, आत्म–विचार, व्यावसायिक इच्छा, सामाजिक स्वीकृति एवं प्रबन्ध का अध्ययन करना।

निष्कर्ष– इस अध्ययन में बुद्धि, आत्मविचार व्यावसायिक इच्छा, सामाजिक स्वीकृति एवं प्रबन्ध का शैक्षिक प्राप्ति के साथ एक सकारात्मक संबंध पाया गया था।

Scanned with CamScanner

3. **संजय सिंह (2004)–** ''शहरी एवं ग्रामीण छात्रों की सामाजिक परिपक्वता का तुलनात्मक तुलनात्मक अध्ययन।''

उद्देश्य– माध्यमिक स्तर के शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता को ज्ञात करना।

निष्कर्ष– शहरी व ग्रामीण छात्रों की सामाजिक परिपक्वता का कार्य नवीनीकरण, स्वनिर्देशन, तनाव सहन करने की क्षमता, वैयक्तिक पर्याप्तता, स्वप्रेषण, आध्यात्मिक विकास, सहकारिता, सामाजिक सहनशीलता, विचारधारा में बदलाव सामाजिक परिपक्वतता समान थी। किन्तु सामाजिक विचारधारा एवं सामाजिक पर्याप्तता में शहरी छात्रों की अपेक्षा ग्रामीण छात्रों की सामाजिक परिपक्वता अधिक थी।

4. **रश्मि सिन्हा (2004)–** ''सेवारत एवं असेवारत महिलाओं की संतानों की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन।''

उद्देश्य– सेवारत एवं असेवारत महिलाओं के किशोर एवं किशोरियों की संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन करना।

निष्कर्ष– सेवारत माताओं की सन्तानों में संवेगात्मक परिपक्वता अधिक पाई जाती है। संवेगात्मक परिपक्वता के संवेगात्मक दमन तथा नेतृत्व हीनता के क्षेत्र में सेवारत एवं असेवारत माताओं की संतानों में अन्तर है तथा संवेगात्मक अस्थिरता, सामाजिक कुसमायोजन तथा व्यक्तित्व विघटन के क्षेत्र में कोई अन्तर नहीं है। सेवारत एवं असेवारत महिलाओं के किशोर इ बालक–बालिकाओं के संवेगात्मक परिपक्वता में अन्तर नहीं है।

5. **सीताराम (2004)** – ने किशोरों की बुद्धि, संवेगात्मक बुद्धि तथा समायोजन में संबंध का अध्ययन किया।

उद्देश्य– किशोरों की बुद्धिमत्ता, संवेगात्मक बुद्धि तथा समायोजन के मध्य सहसंबंध ज्ञात करना था।

निष्कर्ष– किशोरों की बुद्धि व संवेगात्मक बुद्धि में सकारात्मक सहसंबंध है। इसी प्रकार समायोजन एवं संवेगात्मक बुद्धि में भी सकारात्मक सहसंबंध पाया गया।

6. **बर्जान्स्की, माइकेल, डी. और एस, लिंडा एस. (2005)–** ने व्यक्तित्व शैली, मनोसामाजिक परिपक्वता और शैक्षिक निष्पति का अध्ययन किया।

उद्देश्य– मनोसामाजिक परिपक्वता और व्यक्तित्व शैली से विद्यार्थियों में विद्यालय चयन एवं व्यक्तिगत समस्या का हल जानने का अध्ययन करना ।

Scanned with CamScanner

निष्कर्ष– जिन विद्यार्थियों में पहचान शैली एवं मनोसामाजिक परिपक्वता थी उनकों विद्यालय चयन एवं सामाजिक रूप से कार्य करने में सक्षम थे।जिन विद्यार्थियों में इनका अभाव था उनकों विद्यालय में कठिनाईयों का सामना करना पड़ा।

7. **पाण्डेय (2006)** – ने शैक्षणिक चिन्ता के संदर्भ में संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन किया।

उद्‌देश्य– उच्च व निम्न शैक्षणिक चिन्ता व संवेगात्मक बुद्धि में सहसंबंध ज्ञात करना था।

निष्कर्ष– शैक्षणिक चिन्ता व संवेगात्मक बुद्धि के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध है। उच्च शैक्षणिक चिन्ता वाले विद्यार्थियों की तुलना में निम्न शैक्षणिक चिन्ता वाले विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि अधिक थी ।

8. **कु. आभा गुप्ता (2006)–** ''सरकारी एवं गैर सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण का विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता, समायोजन और उपलब्धि पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन''।

उद्‌देश्य– सरकारी तथा गैर सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण का विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता, समायोजन व शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना है।

निष्कर्ष– सामाजिक परिपक्वता के संदर्भ में चारों समूहों के मध्य असार्थक अन्तर पाया गया है।

9. **जायसवाल एवं शुक्ला (2009)** – ने संवेगात्मक बुद्धि तथा इसके विभिन्न क्षेत्रों का सृजनात्मकता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

उद्‌देश्य– किशोर छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि तथा इसके 10 क्षेत्रों का सृजनात्मकता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

निष्कर्ष– संवेगात्मक बुद्धि तथा इसके 10 क्षेत्रों– स्व–सचेतना, परानुभूति, स्व–अभिप्रेरणा, सांवेगिक स्थिरता, संबंधों का प्रबंधन, सत्यनिष्ठा, स्व–विकास, मूल्योन्मुखता , वचनबद्वता तथा परोपकारिता का वैज्ञानिक सृजनात्मकता पर प्रभाव पड़ता है।

10. **सूरी (2010)** – ने कक्षा 12 में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनकी संवेगात्मक बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन किया ।

Scanned with CamScanner

उद्देश्य– उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि एवं विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनकी संवेगात्मक बुद्धि लिंग, विद्यालयों के प्रकार और परस्पर अन्तः क्रिया का प्रभाव ज्ञात किया गया ।

निष्कर्ष– उच्चतर माध्यमिक स्तर के लड़के एवं लड़कियों दोनों की संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

11. **क्वाड्री (2011)** – ने बाल मजदूर छात्र और अन्य किशोरवय छात्रों के संदर्भ में मानसिक स्वास्थ्य और संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन किया।

उद्देश्य– श्रम करने वाले छात्र और अन्य किशोर छात्र की मानसिक स्वास्थ्य और संवेगात्मक परिपक्वता की स्थिति का अध्ययन करना।

निष्कर्ष– नियमित स्कूल जाने वाले छात्रों और बाल मजदूर छात्रों के मानसिक स्वाथ्य और संवेगात्मक परिपक्वता की स्थिति में सार्थक अन्तर पाया गया तथा नियमित स्कूल जाने वाले छात्र बाल मजदूर छात्रों की तुलना में संवेगात्मक रूप से अधिक परिपक्व पाये गये।

12. **नेगी (2011)** – ने उच्चतर माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में शिक्षणरत् शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन किया।

उद्देश्य– लिंग के आधार पर सरकारी एवं गैर सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करना।

निष्कर्ष– अध्ययन में लिंग के आधार पर शिक्षकों का चयन किया गया परिणामस्वरूप लिंग के आधार शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि में कोई अन्तर नहीं पाया गया परन्तु सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर पाया गया।

13. **मथीन (2011)** – ने अभिभावक व बच्चों का संबंध और शहरी कॉलेज लड़कियों की संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन किया।

उद्देश्य– अभिभावक व बच्चों का संबंध किस प्रकार संवेगात्मक परिपक्वता को प्रभावित करता है तथा स्कूल जाने वाली शहरी लड़कीयों की संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन करना।

निष्कर्ष– परिणामस्वरूप पाया कि माता और बच्चों का संबंध पिता और बच्चों के संबंध की तुलनाा में ज्यादा बेहतर पाया गया ।

14. **सिंह, कौर एवं दुरीजा (2012)** – ने विशवविद्यालय के छात्रों के बीच संवेगात्मक परिपक्वता के अन्तर का अध्ययन किया।

Scanned with CamScanner

उद्देश्य– अन्तर्विद्यालयी प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले खिलाड़ी छात्रों और सामान्य छात्रों के बीच की संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन करना था।

निष्कर्ष– खिलाड़ी छात्रों में सामाजिक समायोजन का अभाव था लेकिन संवेगात्मक परिपक्वता का स्तर ऊँचा पाया गया, परन्तु सामान्य श्रेणी के छात्रों में खिलाड़ी छात्रों की तुलना में संवेगात्मक परिपक्वता में कमी पायी गयी।

15. **Nirmaljit Kaur (1982)** made a 'study on relationship between emotional maturity and teaching attitude of teacher-trainees'. She concluded that there is positive co-relation between two variables.

16. **Arya A (1984)** conducted a study for emotional maturity and value of superior children in family. The objectives of the study were to found relationship between intelligence and emotional maturity of boys and girls separately. Second objective was to find out relationship between intelligence and values of boys and girls. The study find that superior boys and girls do well on the emotional maturity tests, superior intelligence showed high relationship with emotional maturity.

17. **Sarabjit Kaur (1984**) in her thesis 'Effect of intelligence and her emotional maturity on academic achievement of graduate level students concluded that there is somewhat significant differences exist among science and arts students with respect to intelligence and emotional maturity.

18. **Larsen and Juhasz (1985)** reported that positive attitude towards parenting was associated with high level of social emotional maturity and with knowledge of child development.

19. **Tyagi (1985)** pointed out that emotional maturity was positively correlated to personal, social and overall adjustment and female subjects scored higher on emotional and overall maturity.

20. **Mishra (1987)** conducted a study on the hostel life of university students and found that hostellers were emotionally more mature as compared to non-hostellers.

Scanned with CamScanner

Annexure-3

Research Gaps Identified in the Proposed Field of Investigation (Based on Review)

किसी भी समस्या पर शोध करने में पूर्व यह देखना आवश्यक है कि विभिन्न दृष्टिकोणों से समस्या का हल कितना उपयोगी है, हम जानते हैं कि बालक समाज व राष्ट्र के भावी नागरिक है। देश का भविष्य ऐसे बालकों के हाथ में है, जो शिक्षा प्राप्त करने के बाद भावी उत्तरदायित्व को सम्भालने वाले हैं। परिवार, समाज व देश की बालकों से बड़ी–बड़ी आशाएं हैं।

वर्तमान बदलती परिस्थितियों के कारण आज छात्र–छात्राओं में भावात्मक परिपक्वता एवं सामाजिक परिपक्वता का अभाव पाया जाता है। जिसके कारण उनमें परिवार एवं समाज के प्रति प्रेम एवं सहयोग की भावना का अभाव पाया जाता है। किशोरावस्था में ही अनुशासनहीनता की समस्या भी अधिक पाई जाती है। जिससे उनमें अपराध प्रवृत्ति का जन्म होता है। जैसा कि वैलेनटाइन का विचार है कि– ''किशोरावस्थ अपराध प्रवृत्ति के विकास का नाजुक समय है, पक्के अपराधियों की एक विशाल संख्या किशोरावस्था में ही अपने व्यवसायिक जीवन गंभीरता पूर्वक आरम्भ करती है।''

अतः विद्यालय, परिवार एवं समाज में छात्र–छात्राओं को ऐसा शैक्षिक एवं सामाजिक वातावरण प्रदान किया जाए ताकि उनमें भावात्मक परिपक्वता एवं सामाजिक परिपक्वता का विकास हो सके जिससे उनमें अपराध प्रवृत्ति का जन्म ना हो और वे अपना योगदान समाज के विकास में दे।

पूर्व शैक्षिक अध्ययनों एवं अनुसंधानों में यह पाया गया है कि जिन बालकों में भावात्मक परिपक्वता एवं सामाजिक परिपक्वता अधिक होती है उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी अधिक पाई जाती है। अतः छात्रों का भावात्मक एवं सामाजिक परिपक्व होना आवश्यक है। आज बदलते सामाजिक परिवेश के कारण युवा विभिन्न प्रकार की असफलताओं के कारण अपना मानसिक संतुलन खो रहे है। इसी कारण वे समाज में अपनी प्रतिष्ठा को खो रहे है। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आयु 15 से 18 वर्ष होती है। इस आयु वर्ग के विद्यार्थियों में लगभग सभी मनोवैज्ञानिक एवं प्राकृतिक क्षमताओं का विकास पूर्णता की ओर होता है और वे अपनी क्षमताओं एवं संसाधनों के आधार पर अपने भविष्य की दिशा तय कर सकें तथा सामाजिक उत्तरदायित्वों के निर्वहन की जिम्मेदारी ले सकें किन्तु यह तभी सम्भव है, जब किशोरावस्था में शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक तथा सामाजिक आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षा का स्वरूप निर्धारित हो। जिससे उनमें भावात्मक एवं सामाजिक परिपक्वता आ सके।

Scanned with CamScanner

पाश्चात्य देशों में किशोरावस्था कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व से संबंधित समस्याओं, उनकी विशेषताओं तथा उनकी शैक्षिक निष्पत्ति के विषय में अनेकों शोध कार्य हुए है किन्तु हमारे देश में इस दिशा में शोध कार्य बहुत ही कम हुए है जो कि न के बराबर है। इसी अभाव की पूर्ति हेतु प्रस्तुत अध्ययन का एक संक्षिप्त प्रयास है। विशेषतया राजस्थान की राजधानी जयपुर में इस प्रकार का कोई अध्ययन नहीं हुआ है यह कार्य इस दृष्टि से भी महत्वपूर्ण हो जाता है और आज जयपुर एक मैट्रो सिटी बन गई है जिसके कारण भी वर्तमान समय में किशोरों की आकाक्षाएँ भी बढ़ गई है। इन्हीं सभी अपेक्षाओं, कारणों एवं वर्तमान समय की आवश्यकताओं को दृष्टिगोचर करते हुए शोधार्थी ने ''माध्यमिक विद्यार्थियों की भावात्मक परिपक्वता एवं सामाजिक परिपक्वता का एक अध्ययन'' शोध समस्या के रूप में चुना।

तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण–

1. भावात्मक परिपक्वता : बालक के तंत्रिकाओं, मांसपेशियों, मस्तिष्क तथा शरीर के आन्तरिक अवयवों में सुधार, परिवर्तन एवं परिपक्वता से है जिस पर बाह्य वातावरण का प्रभाव नही पड़ता ।

2. **सामाजिक परिपक्वता :** बालक परिवार एवं समाज में रहते हुए समाज के मूल्यों, मानकों व नियमों को भलि–भॉति समझते हुए सन्तुलित व्यवहार करता है तो इसी गुण को सामाजिक परिपक्वता कहते है।

Scanned with CamScanner

Annexure - 4

Major hypothesis, if any
प्रस्तावित शोध की परिकल्पनाएं

किसी भी शोध कार्य को सीमित करने के लिए एवं मार्ग को दिशा प्रदान करने के लिए परिकल्पनाओं का निर्माण करना आवश्यक है, क्योंकि बिना पनिकल्पना के अवांछित एवं अनुपयोगी आंकड़ों को एकत्रित कर लेता है। इसलिए परिकल्पना से उचित एवं उपयोगी आंकड़ें एकत्रित करने में सहायता मिलती है तथा समय के साथ धन की भी बचत होती है। गुड तथा हैट (Good & Hatt) के अनुसार, ''परिकल्पना इस बात का वर्णन करती है कि हम क्या देखना चाहते हैं। परिक्लपना भविष्य की ओर देखती है। यह एक तर्क–पूर्ण वाक्य है जिसकी वैधता की परीक्षा की जा सकती है। यह सही भी सिद्ध हो सकती है और गलत भी।''

शोधार्थी ने प्रस्तावित लघुशोध में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की भावात्मक एवं सामाजिक परिपक्वता के प्रभाव को ज्ञात करने के लिए निम्न परिकल्पना का निर्धारण किया है–

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में भावात्मक परिपक्वता का उनके भावात्मक अस्थायित्व में सार्थक सह–संबंध है।
2. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में भावात्मक परिपक्वता का उनके भावात्मक परावर्तन में सार्थक सह–संबंध है।
3. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में भावात्मक परिपक्वता का उनके सामाजिक अपसमायोजन में सार्थक सह–संबंध है।
4. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में भावात्मक परिपक्वता का उनके व्यक्तिव विघटन में सार्थक सह–संबंध है।
5. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में भावात्मक परिपक्वता का उनके स्वतन्त्रता की कमी में सार्थक सह–संबंध है।
6. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सामाजिक परिपक्वता का उनके व्यक्तिगत उपयुक्तता में सार्थक सह–संबंध है।
7. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सामाजिक परिपक्वता का उनके अन्तर संबंध उपयुक्तता में सार्थक सह–संबंध है।
8. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सामाजिक परिपक्वता का उनके सामाजिक उपयुक्तता में सार्थक सह–संबंध है।

Scanned with CamScanner

Annexure - 5

Material and Methods/Research Methodology
शोध प्रविधि

शोध विधि–

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य में सर्वेक्षण विधि प्रयुक्त की जा सकेगी।

जनसंख्या–

किसी भी अनुसंधानकर्ता के लिए यह संभव नहीं है कि पूरी जनसंख्या के समग्र व्यक्तियों को अपनी खोज का विषय बना सके इसलिए जनसंख्या में से कुछ ऐसी इकाईयों का चयन कर लेते है जो कि समग्र का प्रतिनिधित्व करे और जिन पर किये गए अध्ययन के आधार पर समग्र के लिए निष्कर्ष निकाले जा सके।

न्यादर्श–

शोधकर्ता द्वारा न्यादर्श के रूप में जयपुर जिले के **नवोदय विद्यालय, केन्द्रीय विद्यालय, सरकारी विद्यालय एवं निजी विद्यालयों** में अध्ययनरत 600 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप में किया जायेगा।

न्यादर्श का वितरण
कुल 600 विद्यार्थी

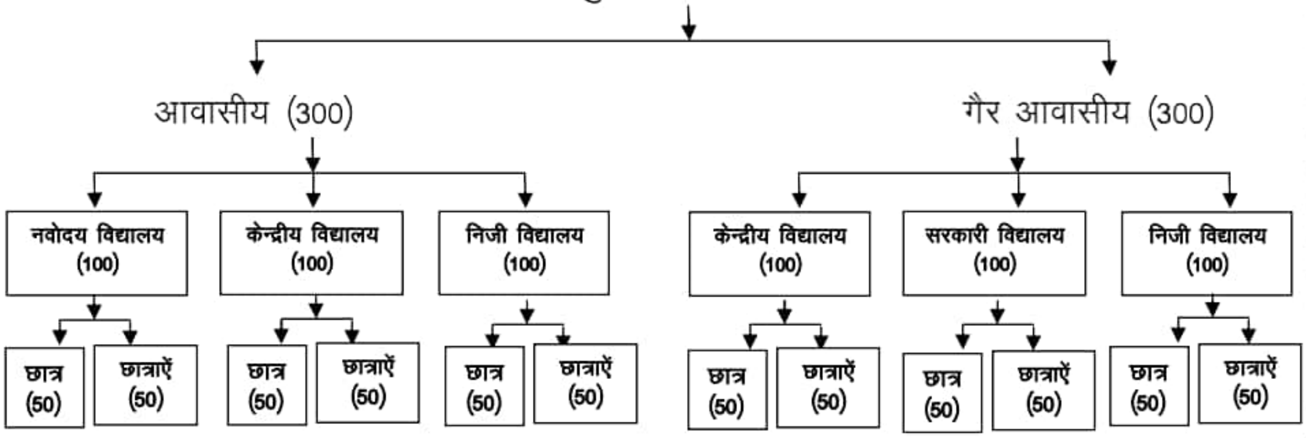

अध्ययन की परिसीमाएँ–

समयाभाव व धनाभाव एवं अन्य सीमा साधनों के कारण शोध को परिसीमित किया गया है –

1 शोध अध्ययन हेतु केवल जयपुर जिले के नवोदय विद्यालय, केन्द्रीय विद्यालय, सरकारी विद्यालय एवं निजी विद्यालयों को लिया जायेगा।

Scanned with CamScanner

2 यह अध्ययन नवोदय विद्यालय, केन्द्रीय विद्यालय, सरकारी विद्यालय एवं निजी विद्यालयों के 600 विद्यार्थियों तक ही सीमित रखा जायेगा।

3 इस अध्ययन में केवल माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की भावात्मक परिपक्वता एवं सामाजिक परिपक्वता का ही अध्ययन किया जायेगा।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण–

प्रस्तुत शोध में निम्न उपकरणों का प्रयोंग किया गया है :–

1. डॉ. आर. पी. श्रीवास्तव द्वारा निर्मित व मानकीकृत उपकरण सामाजिक परिपक्वता "Social Maturity Scale" (SMS)

2. डॉ. वाई. सिंह एवं डॉ. एम भार्गव द्वारा निर्मित व मानकीकृत उपकरण भावानात्मक परिपक्वता "Emotional Maturity Scale" (EMS)

Yashvir Singh & Bhargava's Emotional Maturity Scale (EMS) (1999) Emotional maturity scale prepared by Dr. Yashvir Singh and Dr. Mahesh Bhargava (1999) was used to measure emotional maturity. Emotional maturity scale deals with interplay of forces with intensities and quantities in terms of different aspects: (a) Emotional unstability, (b) Emotional regression, (c) Social maladjustment, (d) Personality disintegration, (e) Lack of independence 82

(a) Emotional Unstability: This is a broad factor representing syndrome of lack of capacity to dispose off problems, irritability, needs, constant help for one's day to day work, venerability and temper tantrums. This group has a high correlation (0.75) with the total score obtained on the scale. Emotional unstability is an independent factor of emotional immaturity. *(b) Emotional Regression:* Emotional regression is also a broad group of factors representing such syndromes as feeling of inferiority, restlessness, aggressiveness and selfcenteredness. This has emerged as the broadest factor in the scale as revealed by the factor analysis. It has a high correlation with the total score on all the five factors of the scale. *(c) Social Maladjustment*: Such a person shows lack of social adaptability should hatred, seclusive but boasting, liar and shirker. *(d) Personality Disintegration*: It includes all those symptoms which represent disintegration of personality like reaction, phobias formation, rationalization, pessimism, immorality etc. Such a person suffers from inferiority and hence reacts to environment through aggressiveness, destruction and has a distorted sense of reality.

Scanned with CamScanner

Such a person shows parasitic dependence on others, is egoistic and lacks 'objective interests'. People think of him as an unreliable person. Reliability of the Scale The test-retest reliability of the scale was measured by administering it upon a group of collegiate students (N=150) including male and female students aged 20-24 years. The time interval between the two testing was of six months. The product moment 'r' between the two testing was 0.75. Validity of the Scale The scale was validated against external criteria i.e. the 'Gha', area of adjustment inventory for college students by Sinha and Singh. The 'Gha' area in inventory measures emotional adjustment of college students. The number of items of this area is twenty one. Product moment co-relation obtained between total scores on all twenty one 'Gha' items and total scores on EMS was 0.64 (N=46). Table 3.8 shows the interpretation of the scores on the basis of this test:

Table

Interpretation of Emotional Maturity Scores

Scores	Interpretation
50-80	Extremely stable
81-88	Moderately stable
89-106	Unstable
107-240	Extremely unstable

Emotional maturity scale has a total of 48 items and is a self-reporting five-point scale. Items of the scale are in question form demanding information for each in any of the five options mentioned below: "Very much, much, undecided, probably, never" The items are so stated that if the answer is in positive say very much, a score of five is given; for much 4, for undecided 3, for probably 2 and for never a score of 1 is to be awarded. Therefore, higher the score on the scale, greater is the degree of the emotional immaturity and vice-versa.

अनुसंधान विधि

अनुसंधान की श्रेष्ठता विधि पर निर्भर करती है। विधि अनुसंधान प्रक्रिया को परिचालित करने का एक तरीका है जो समस्या की प्रकृति द्वारा निर्धारित है। शोधकार्य एक विशेष महत्व का उत्तरदायित्वपूर्ण सत्य कार्य है और अगर इस उत्तरदायित्व को पूर्ण करने में वैज्ञानिक व उपयुक्त विधि का प्रयोग नहीं किया जाये तो यह कार्य कभी पूर्ण नहीं हो सकता है।

Scanned with CamScanner

प्रस्तुत शोध में विषय की समस्या को भली प्रकार समझकर, सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करने के पश्चात् यह निष्कर्ष निकाला गया कि शोध समस्या के मुख्य उद्देश्य अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि से अधिक सम्बन्धित हैं। अतः शोध की प्रकृति व सर्वेक्षण विधि की उपयोगिता के आधार पर शोधकर्त्ता ने प्रस्तुत अनुसंधान में आँकड़ों के एकत्रीकरण हेतु **सर्वेक्षण विधि** का प्रयोग किया है।

Scanned with CamScanner

अध्यायों का वर्गीकरण–

1. प्रथम अध्याय :

- समस्या की पृष्ठभूमि – प्रस्तावना
- समस्या का औचित्य
- समस्या कथन
- समस्या में प्रयुक्त शब्दावली का स्पष्टीकरण
- अध्ययन की परिकल्पनाएँ
- प्रस्तावित शोध के उद्देश्य
- शोध विधि
- अध्ययन की परिसीमाएँ

2. द्वित्तीय अध्याय :

- संबंधित साहित्य का अध्ययन – प्रस्तावना
- संबंधित साहित्य का अर्थ
- संबंधित साहित्य का महत्व
- संबंधित साहित्य के लाभ
- संबंधित साहित्य का स्त्रोत
- पूर्व में किए गये शोध अध्ययनों का विवरण

3. तृत्तीय अध्याय :

- अध्ययन विधि
- प्रयुक्त चर
- जनसंख्या एवं न्यादर्श
- प्रयुक्त उपकरण
- प्रयुक्त सांख्यिकी

4. चतुर्थ अध्याय :

- समंको का संकलन
- समंको का सारणीयन
- समंको का विश्लेषण एवं व्याख्या

5. पंचम अध्याय :

- शोध के निष्कर्ष
- शोध के शैक्षिक निहितार्थ
- भावी अध्ययन हेतु सुझाव

संदर्भ ग्रन्थ सूची

Scanned with CamScanner

Annexure - 6

List of References
संदर्भ ग्रन्थ सूची

अग्रवाल, एस. के. (1980). शिक्षा के तात्विक सिद्धान्त, मेरठ, राजेश पब्लिशिंग हाउस

अग्रवाल, डॉ. गोपाल कृष्ण (1994). सामाजिक नियन्त्रण एवं परिवर्तन, आगरा, आगरा बुक स्टोर

अग्रवाल, डा. जी. के. (1980). मानव समाज, आगरा, ओम प्रिन्टिंग प्रेस पचकुइंया

अस्थाना एवं अग्रवाल (1963). मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर

आलपोर्ट (2011). सिंह, अरूण कुमार, शिक्षा मनोविज्ञान, नई दिल्ली, भारती भवन

क्वाड्री, जे. (2011). ए स्टडी ऑफ मेंटल हेल्थ एण्ड इमोशनल मैच्यूरिटी अमंग चाइल्ड लेबर स्टूडेन्ट्स एण्ड अदर एडोलीसेंस। इंटरनेशनलऑनलाइन मल्टी डिससिपलाइनरी जरनल, वाल्यूम 1 (8), पृष्ठ सं0–52।

नेगी, एस. (2011). उच्चतर माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में शिक्षणरत् शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन। ब्रिक्स जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, वाल्यूम–1(2), पृष्ठ सं0–80–86।

मथीन, डब्ल्यू. (2011). पैरेंट चाइल्ड रिलेशनसिल्प एण्ड इमोशनल मैच्यूरिटी ऑफ सिटी कॉलेज गर्ल्स। गोल्डेन रिसर्च थॉट, वाल्यूम–1(1), पृष्ठ सं0 1–4।

सूरी, आर. (2010). इम्पैक्ट आफ इमोशनल इंटेलिजेंस आन अचीवमेन्ट ऑफ क्लास 12 स्टूडेन्टस। एजूसर्च, वाल्यूम–1(2), पृष्ठ सं0–98–101।

जायसवाल, वी., शुक्ला, एम. के. (2009). ए स्टडी ऑफ इम्पैक्ट आफ इमोशनल इन्टेलीजेन्स आन साइन्टिफिक क्रियेटिविटी अमंग सीनियर सेकेण्डरी स्टूडेन्ट। इण्डियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल रीसर्च, वोल्यूम–28(2), पृष्ठ सं0–35–44।

पाण्डेय, आर. के. (2006). शैक्षणिक चिंता के संदर्भ में संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन। जर्नल ऑफ एजुकेशनल स्टडीजः इलाहाबाद, वाल्यूम–4 (1,2)।

Scanned with CamScanner

सीताराम, एल. (2004). रिलेशनशिप बिटबीन, इंटेलीजेन्स, इमोशनल इंटेलीजेन्स एण्ड एडजस्टमेन्ट।

Kaur Nirmaljit (1982) Study on relationship between emotional maturity and teaching attitude of teacher-trainees.

Arya A (1984) A study for emotional maturity and value of superior children in family.

Kaur Sarabjit (1984) Effect of intelligence and her emotional maturity on academic achievement of graduate level students.

Larsen and Juhasz (1985) reported that positive attitude towards parenting was associated with high level of social emotional maturity and with knowledge of child development.

Tyagi (1985) pointed out that emotional maturity was positively correlated to personal, social and overall adjustment and female subjects scored higher on emotional and overall maturity.

Mishra (1987) A study on the hostel life of university students

Websites :-

1. www.ssmrae.com/wisdom/../.pdf
2. www.shodh.ganga.com/hdl/handle.net/10603/4471
3. www.indianjournals.com/ijor.aspx?targetijor: ajdm&volume-4
4. www.eduresearch.dauniv.ac.in/file.asp?

30/5/16

Signature of the Candidate with date

Outline Approved

Name and Signature of Supervisor with date & Seal.

डॉ. नागेन्द्र सिंह
Dr. Nagendra Singh
विभागाध्यक्ष-शिक्षा
Head Deptt. of Education
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
Regional Institute of Education
अजमेर (राज०)/ Ajmer (Raj.)

Scanned with CamScanner